

50872-50876





50872 - (विज्ञान भैरव)

50873 - (ज्ञान सार)

50874 - (तत्त्व सार)

50875 - (कील सुभाषित)

Acc. No. 50872

50876 - (पाश्चात्तर कला)

ज्ञान भैरव त्रीविजानीपत्र ।



साउरवर्णि संभः॥ सदैवैभिर्द्विभः॥ सदैवैभिर्द्विभः॥ सदैवैभिर्द्विभः॥  
 उम्मीष्टव'य ॥ सदैवैभिर्द्विभः॥ सदैवैभिर्द्विभः॥ सदैवैभिर्द्विभः॥  
 भसैषे' भाग'इरविरुगमः॥०॥ सु'ट'रि'न'वि'रु'ते'भ'भ'न'यः परम  
 चर॥ किं'उ'प'उ'ड'उ'डे'व'म'व'र'मि'क'ल'इ'र'भा॥१॥ किं'न'र'इ'क'ठ'व'  
 न'ठ'र'इ'ठ'र'व'र'उ'डे॥ इ'मि'र'र'क'म'ठि'र'व'किं'न'उ'ड'य'इ'क'भा॥२॥  
 न'म'वि'र'भ'य'व'पि'किं'म'र'व'रि'र'ण'क'भा॥ म'र'उ'र'भ'न'क'ं'व'किं'व'  
 म'जि'भ'उ'य'क'भा॥३॥ पर'पर'यः भ'क'ले'भ'पर'य'स'व'प'नः॥ पर'य'

सु  
 ठ  
 ०



50872

निकुञ्ज भैरव श्रीबोपाजीमत

यामितुगुह्युद्वरवंतुद्विमपुते॥५॥नदिवल् विठमेनमदकेमेन  
वभनः॥परवं निष्कलदेनभकलदेनवठवेता॥६॥  
मंजुनभनपनिमोपंकिदिभंमयभा॥ श्रीठैरवः॥भापभापइ  
यपुपुंउतुगणभिदंभदग॥गुदनीयतुमंठइउषापिकषयभिउ  
यकिदिइकलंउपंठैरवभृप्रकीतिउभा॥उमभारतयमेवि वि  
ह्यंमन एलवता॥३॥भायभृपभंसेदगवचनगंगरुभभा॥पु  
नंजंइउतुद्वीरंरियरुभृवतिरभा॥७॥केवलंरुलिउंभं







श्रीः

उद्धतेऽप्येवंविधं विप्रप्रयत्नम् ॥ एवं विष्णु उद्धतः  
प्रहः कश्चिदपि ॥ एवं विष्णुः सवभुयः वभुः पविर्गीय  
ते ॥ मायापरापुत्रः सवभुयः प्रकीर्तितः ॥ मक्तिमक्तिभते  
रभुः सवभुयः मवमक्तिः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः  
परापुत्रः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः ॥ केवलं  
सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः



ॐ नमो भगवते ॥ १०१ ॥ उद्गमो मिव तु पीपुष्पे वीभाषे भिद्वेष्टते ॥ १०२ ॥  
यस्य लोके रम्यं पशुकिं गच्छेत्तु भक्तं भुवः ॥ सुखं ते मिमिषि गण  
उद्गमस्तु मिवः प्रिये ॥ १०३ ॥ श्री देवी उवाच ॥ देवदेव इति पुल  
कं कपालं दत्तं तु प ॥ १०४ ॥ मित्रं मकलं मुच्यते पश्य मे विव  
लिता ॥ यमकिं तु रिता कर्तव्यं भुपलं हते ॥ कैमपयैश्च  
पुण्ड्रं भुः परमं हतः कर्षेत्तु ॥ यमभुगदं वेदितुं च भ

श्रीः  
३



कृत्ति ठैरवा॥ ३७॥ श्री ठैरव उवम॥ उचं पू लं दु एणी वं  
विमन इ प रं स गे उ॥ उ उ डि डि उ य भु रं ठ ग ल म्भ रि उ  
कि डिः॥ ३७॥ भ म्भ उ उ उ दि चा पि वि य इ य म्भ रि वं उ न ग॥  
ठै ग उ ठै ग व भु उं ठै ग वि ह ए उ व प्रः॥ ३८॥ र व ए व वि म्भ  
सु डि म्भ न म्भ पा वि क म्भ उ॥ रि चि क ल्द उ या भ म्भ उ या  
ठै ग व उ प प उ॥ ३९॥ क भि उ ग म्भ उ व पि प्र रि उ व य म्भ



वे०॥५॥ उ० सा० उ० रा० भा० भो० मे० ह० सा० उ०ः ५॥ क० स० उ०॥ ७॥ सु० अ०  
ल० कि० ग० अ० न० मं० अ० द्वा० द्वा० उ० ग० दि० क० भा०॥ मि० उ० ये० डं० दि० प०  
ह० उ० सा० भु० उं० ती० ठे० ग० वे० म० यः॥ ७१॥ उ० म० क० उं० ती० उ० दि० द्वा० रं० प्र० हि०  
मं० क० र० म० उ० म० भा०॥ उ० वं० अ० पि० इ० यं० य० व० ड० व० म० उ० म० लं० म० यः॥ ७३॥  
ह० म० द्वा० म० म० कं० म० भु० ग० म० म० द्वा० ग० ठे० मि० उ० भा०॥ अ० ल० म० द्वा० प०  
ग० मि० इ० म० द्वा० म० द्वा० उ० उ०ः॥ मि० वः॥ ७७॥ उ० षा० प्र० द० सु० म० रा० उं०

श्रीः  
+







मपुम उ विमभ्रश्वतुपय ॥ ए उ उ हेमय मिश्र उ यगैवः  
प्रक मउ ॥ ३५ ॥ कगमदू मगमु ॥ हू ठ म दू गगैव ॥ ३६ ॥  
पु विमै रू म ह्री रउ म ए पय म भि ॥ ३७ ॥ ण म उः हू र  
म भु उ म दू विडिल क र उि मा ॥ विमं मिष्ठा उ रू म येल  
म उ ए य उ लयः ॥ ३८ ॥ म र द उ प इ क लू ठ ग्र म व म वि  
म उ ॥ म व रू दू लि रि कू उः प रं व दू णि ग कू उि ॥ ३९ ॥ प



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सुत उवाच ॥  
तुमुत्तमोतिष्ठैरवि ॥ ३३ ॥ यष्टकं मुपिवरुमुपचार  
नरठवयेत ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥  
उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥  
सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥  
सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥  
सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥  
सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥ सुत उवाच ॥







भवंमेदगुं कुरुं वियहृपुंभगद्वल॥ विठवयेउउमु  
मुठवरभाभिरगभवेउ॥ २०॥ दिदउगइविठगंठिडि  
भाउंविमिउयेउ॥ २१॥ दिदउगइविठगंठिडि  
हृहृकमेविनीरदः परमभएभएगः॥ २२॥ मरउयेउ  
मुठगपयंभोठगुभाप्रयाउ॥ २३॥ भवउः भमगीगभृहृ  
दमाउभरेरयेउ॥ २४॥ हृहृविठगंठिडि २०॥



यप्रउभयइउइइममाउभरः द्विपेउ॥प्रतिवादी  
कउचैलइउंमिरेइवेउ॥५०॥कलापिउकलप्रगइउ  
उइभकंपंगभा॥प्रपुंविमिउयेउम'उ'कभभुमठवेउ॥५१॥  
पवभेवणगइचंदगुंएइविकल्पउः॥अउयेउभःपं  
भःपंठवपेभेठवेउ॥५२॥भदेदेणगउंवापिअइभइ  
कगलिमा॥उइरियाउसलयेपुइउंएउपग॥५३॥पा



संमदुलं माकिं पुद्गलमगमगे॥ प्रविष्टुलमयपुद्गल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५८ ॥ कुर्वन् प्रणिपत्यैव मित्रयेत्

भर्मेपिलभा॥ कुलशुद्धिपरमिदृशवन्दुभर्मेलयः॥ १५॥

समुभचमुविषमुपदत्तेषमममुतः॥सप्रक्रिययाउडुप

वृष्टाद्भद्रमयः॥५०॥ विष्णुभक्तमदमाविष्णुहृत्तुविम

तुय३॥ उइवमभनला३॥ उउसुह्रय३॥ एरमा॥ प॥ प॥ ए



ਸ੍ਰੀ:

ਨਿਭਾਨਾਨਾ ਪਿੰਡਿ ਤੀ ਮੁਝਾ ਵਿਨਿਦਿ ਪੇਸਾ ॥ ਤੁਲਯੰਤੁ ਭੁਖਾਨਾ  
ਫੁਲੁ ਯਾਤੁ ਮੁਝੈ ਰੁਕੇਤਾ ॥ ੫੩ ॥ ਵਿਲੀਰੇ ਮਾਮਰੁ ਮਰੁ ਕਉ ਭੀ  
ਪ੍ਰਾਪਤ ॥ ਤੁਝੈ ਰੁਕੇਤਾ ਚੁਰਾਇ ਮਾਮਰੁ ਮੁਝੈ ॥ ੫੪ ॥ ਯਾ  
ਗਪਿ ਸੁਝੈ ਯੰਤੁ ਭਾਮਾ ਯੰਤੁ ਪੁਕ ਮਾਤੁ ਰੁਕੇਤਾ ਰਿਗ ਮੂਰਿ ਤੇਰੇ  
ਰੁਕਾ ਤੁਰੰਗੁ ਯੋਗ ॥ ਤੁਝ ਤੁਝੈ ਰੁਕੇਤਾ ਰਿਕ ਮਾਤੁ ਤਿਠੁ ਰੁਕ ॥ ੫੫ ॥  
ਮਚੰਦ੍ਰੇਯੰ ਮਿਥ੍ਰਯੰ ਦਿਯਾ ਗਾਥਾ ਪਰਿਠਾਯੇਤਾ ॥ ਯਗ ਪਾਤ੍ਰਿ ਚੰਦ੍ਰਕਲੇ

ਸ੍ਰੀ:  
੩



*Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org*



वद्विचिषभृभष्टेडमिडंभापभयंदिपेडा॥ कवलंवाप्रलंवा  
भगवत्स्यष्टे॥ ५७॥ मक्तिभद्रभभंकावृमइमवभानि  
का॥ यकापेवद्रउडुभुउकापेभृभभृउ॥ ५८॥ लेदराभृ  
नकेलैःभृभापभृरुगभृउः॥ महुठवेपिमवेमिठवेमंन  
भभ्रवः॥ ५९॥ भुनभभद्रतिप्रपुभृभृवठभृवामिगडा॥ भुनभभ  
भृउंभृभृउलयाउभृभृभृ॥ ६०॥ एगिपभृभृउलभभभन



म विष्णु भुज्जु ॥ ८ वयम्भु रिउ वसंजु भदर न्नु भुउं क वउ ॥ ११ ॥  
मीरु मि विधय भ्रम भभ भो ऐ क उ द्रनः ॥ ये गिर भु न्न य इ न  
भुउं क भुउं क ॥ १० ॥ च इ य इ भन भु वि न्न भु इ वण य उ  
उ उ उ प र न्न भुउं पं भं प्र क म उ ॥ १३ ॥ अ न्न ग उ यं रि न्न यं  
॥ पु र न्न ग म र भ व भु भन भग भु प र न्न वी प्र क म उ ॥ १३ ॥  
उं ल भ भद मी प म र क म म व ली न उ ॥ म्भु वि वि न्न भुउं इ व भ







Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



अनुपं प्रक मउ ॥ ११ ॥ कगदि ७० रैपरय कौलु लेलिद रय ॥  
विमदा मृष्टिकलेम पराशुभिः प्रक मउ ॥ १४ ॥ भद्र भव भिष्ट ए  
क दमुपामे रिग प्रयभा ॥ रिण यउ च्चु भद्र रप रि प्रलु भा  
क व ॥ १० ॥ उप विष्टु भवेम भुग द्रुद व च उ छि उ ॥ क ह  
ह विभरः कुच सुभ भाया डिउ ह्रया उ ॥ ११ ॥ कुल उप भु  
रं भु भुं मा भिं रिपा उ य उ ॥ सुमि रं रिगणं भर व द मि



वं वृणोत ॥ १३ ॥ मष्टिणि द्वेभ्यः निउभु मष्टिणि द्विष्टु कउ ॥  
देष्टांभ रमः कचंभुतः मातु प्रलीयत ॥ १७ ॥ सुभरेमय  
रुक्तिव रिगाणं विरुः स्येउ ॥ भुदेदंभरमिहो लोहा ॥  
हो ॥ मयैरुवेउ ॥ ३ ॥ मलभरेभुिउभुासमरैचादेदमा  
लरउ ॥ भुमांभुभरमरुवेदिविदिहोपाभाप्रयाउ ॥ ३० ॥  
लीरंभ्रविदियकचंठैगवडेरुवयेउ ॥ उकचंठैगवकं







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥ अविर्बुधमविभक्तं स अकल्पं  
उमदरा ॥ ३१ ॥ उमेति मे विभदमस्तु शीघ्रः परमेश्वरः ॥ ३२ ॥ म  
विभक्तं भवत्तु विभक्तं मे मिदं कुरु ॥ विराण्येन मिदं  
भक्तं मे द्रुमभरतं रभा ॥ ३३ ॥ हे भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं  
गरुडभक्तं ॥ विराण्येन मिदं कुरु भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं ॥ ३४ ॥  
किञ्चिदपि विविष्टं मे भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं भक्तं ॥ ३५ ॥



ये कलैरवी निमल गातिः॥७॥ मिड्डुतः व डिना सिम  
भा उड्डुय मिडि॥ विकल्पा राभठवेर विकल्पं न सिद्धि  
ठोड॥ भाया विभेदरी राभ कलया कल रं भिडभा॥७  
डु मिड्डु रं पं डे कल यत्र प व गठवेड॥७७॥ रागिगी छं  
मभरुत्रा भवले क मभेरयेड॥ यउ पव मभरु उउउ मुइ  
रली गउ॥ यम मभे कुररुत्रा सु रं व क मुय भिरे॥ उड्डु उ



कउमरुउमुल्लोरमुमरुनैठवेउ॥७२॥५॥कयभसव  
खउमिउंरेवेमयेउ॥मुद्रवदुररुयेउमुउमुद्रमचरभा॥७३॥  
विमणगंठवहुररिदिभिउंरुमद्रकभा॥उद्रउकमुमिनेउ  
देवंहपामिवःप्रिये॥७४॥पिद्रमभवदेवविमधैरुमु  
ऊरुपिउ॥अउअउअयंभवंठवयेद्रवणिपुनः॥७५॥कम  
रूपलैठभेदभममद्रदगोगे॥वडिंदिभिभिउंरुद्रउउ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
कृष्णाय नमः ॥ ७४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
पद्मसूक्तं ॥ ७५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
मिष्टं ॥ ७६ ॥ विदुः सविता विष्णुः सवितुः ॥  
देवभरमासु ॥ ७७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
सविता विष्णुः सवितुः ॥ ७८ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



उभचगः॥३॥गृह्णगृहकंमंविडिभ्रभातुमवम॥१०  
यै(गरांडविमेधैयंमभ्रत्रेभ'वण'रड॥३॥भ्रवमभ्रमगीगपि  
मंविडिभ्रवठवयेड॥भ्रपदंभ्रमगीगभ्रहृहृहृपापिदिरे  
वेड॥४॥रिंगणपंभ्ररहृहृविकल्दत्रविकल्दयेड॥उम  
भ्रपगभ'भ्रहृहृहृहृभ्रगलेमरे॥५॥भ्रचल्लभ्रचकडमभ्र  
पकणैभ्रभ्ररः॥भ्रचकदंमैवणभ्र७डिहृहृभ्रिरेठवेड॥६॥



॥ भुवैभयवद्रुल्लुग्नैरुगवेः ॥ भभैवैरुगवेः ॥  
 विभुगुविजिजः ॥ १ ॥ हृदुहृदुमरीगालिडुपुडुविप  
 उगुडु ॥ दौठमजिबिगभे ॥ पराभहृयउदम ॥ ३ ॥ सुपपडु  
 पवमहृपुगुविडुलयेरवा ॥ एउमजिभभावेसहृठु  
 ठेगवेवपः ॥ ७ ॥ भभुदयभिगंठदुमपभभुगुगये ॥ के  
 वभुएगुडुभहृरेइयेभुवभुइये ॥ ० ॥ कुपादिकेभदग



*Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org*







डि ०३। यइयइ मरैया डिउउउ रेवउइ ॥ पा  
 इइरवभिइइ। किमिह्लेदभ्मउ सुदिः भाउभुः  
 म० ७५ मे० १ रसुमिह्ल सुमिभुभ विचिकल्लेठवोम  
 डि॥ ०७॥ भवउठैरवंठवंभाभाउभुवगीमग॥ १ मउइ  
 डिउके॥ प० भुीइइयाभडि॥ ७॥ भमः मइमभिउ  
 मभभभभभभभभभ॥ इइ॥ परिपुल्लइ मिडिइ







१॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥ ह्रियः ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥  
ले ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥  
ममममये ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥  
हृ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥  
लममकः ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥  
मउडुभिदुएलकमिमंमचमवा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ १॥ ॥







एवमेकश्चकवद्वल्लुयल्लुं प्रकमज॥ ३३॥ भ२भंसे  
रमजिगः इमोतिमउपुयभा॥ यमप्रियेपविद्वि  
उद्धैवंप्रः॥ ३४॥ विभुपद्मेमरंमउमकुंमभंनः॥  
इममाहाणिकंमेवियल्लुइल्लुविरेणर॥ ३५॥ अइल्लुक  
उमयउंएयउंठैवभुयभा॥ कगेडिमचकमलिमाप  
उपुल्लुककः॥ ३६॥ मणारभउंमंतिमोलिभादिगु



त्रिः॥ ये गिरिचंद्रप्रिये मे विभक्तमेलापकं णिपः॥ ह्रीं वत्र  
वाचि वत्र भो कचत्र पि विमेषि उभा॥ श्री मे वृवागा॥ ७८८८  
गिरिचंद्र वपरा मे हृ भद सुग॥ एवम भु भव भु यो एापः  
के एपक स्रकः॥ ३३॥ ए यउ के भद मे व प्र हृ उ क स्रक प्र  
उ॥ द्रयउ क भु वा द भे यगा द इ मि कं क व भा॥ ३७॥ श्री  
क व उ व म॥ ए वा रि प्र क्रिया ग हृ भु ले प्र व भ गे द ॥ ३७॥



कृयेकृ यः परकवैकवनरकवृतेदियां॥ एपः भैश्चयंरगभि  
इक्रणपुर्वेसुमः॥ २०॥ एपंया रिञ्जलावद्वि विरक्क  
रश्रया॥ रउएनमगीरादिभापदभाद्रिकल्दरा॥ २०॥ पु  
भनप्रधुदुदभंतिः क्रियतेसुम॥ रिचिकल्दभंदष्टेभि  
भापुएद्रामिरलयः॥ २३॥ अइकेउभयजिभैयेउउदि  
राद्रिभा॥ कगिउकभभुइद्राप्रिगष्टुप्रलुड॥ २२॥ भदकु



इलयेवद्रुंउडाविषयादिकंभा॥द्रयउभरभाभाकंभदे  
भयेमभूमा॥२५॥यागैइपरभेसारिडविग्नरुलडा॥  
रापअइवपमरंइअदिषुभुपावति॥२६॥नद्रुमतिभ  
भवेमभुइइरुवरपरा॥मृषउभुउडुभुकप्रएकमृष  
ति॥२७॥येरवप्रणउरुहेभुदुउवापरापरा॥यमेवप्रणकः  
भवःभापवेमःकप्रराभा॥२८॥इएइविमेल्लीवउड



या ऊतिल दितिः ॥ मी ऊ ऊ मा पराये वी परं द्वा इंपरा परा ॥ २० ॥  
अमु भवरागं भिषु म्दर म्भये प्रग ॥ उया म्दु म्भा वि  
पुः परं ठे राव भा प्रया ज ॥ ५० ॥ चक विं म्दु द्वा लि ध्व म्दु  
विमि व निम भा ॥ एपे म्दु म्भ म्दु पु म्दु ल ठे म्दु ल ठे एदः ॥ २० ॥  
पउउ क विउं गुदुं परा म्दु म्भ उ म्भ भा ॥ यमु क मु म्दु म्दु म्दु  
१५ क मु म्भ म्दु दिउ ॥ ५१ ॥ परा मि धो पल रु रे म्दु म्दु गु म्दु प



मयेः॥ विविक्कलभडीरंडसीगा॥ भडभाडाभा॥ ५३॥ ठड  
योगनवनभुदडडंडिविमदकया॥ ग्राभंगणुप्रगंमेमंपरुद  
डडभुकभा॥ ५४॥ भवभउडु रिडणुगुडुभउमंगदल॥  
किभेमिगभिकुगैविभिकुगंपरभिमंणरभा॥ ५५॥ पू॥ भ  
पिप्रदडडुवमेयंपरभाभउभा॥ श्रीदेडुवामा॥ देवमेव  
भदमेवपारिडुपुभिमसदुग॥ रुदुयाभलडडुभुभगभ



ॐ वरुण सिद्धि ॥ ५७ ॥ भवमक्ति प्रकृतं संहारं संहारं संहारं संहारं  
वै ॥ ७७ ॥ संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं  
७ ॥ ७ ॥ संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं  
योगमा ॥ ७ ॥ संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं

गिरि ॥ ७ ॥ संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं संहारं



